International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# महाकवि कालिदास का दर्शनतत्त्व

## डा. शुचिता ला. दलाल

प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्षा, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठ, नागपूर(महाराष्ट्र)

कालिदास केवल कवि नही थे। वो एक तत्त्वज्ञानी वा दार्शनिक थे। उनकी रचनाएँ सूक्ष्मतया दृष्टिगोचर हो तो जीवन के अनेक पैलू दृष्टिंगत होते है ।

**Abstract**

कालिदास इस जगत के अधिष्ठाता ईश्वर को अष्टरूपी देवता मानते है । कालिदास का ईश्वर 'शिव' था। सृष्टि का हरेक पदार्थ कालिदास को 'शिव' रूप में लगता था। भगवान् शिव प्रत्यक्ष आठ रूपों में विद्यमान रहते है। जल, अग्नि, होता, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथिवी तथा वायु ये आठ रूप ईश्वर के है। इसी आठ रूपों में शिव का दर्शन होता है ,यही कालिदास का तत्त्वज्ञान है।

**कालिदास तथा ईश्वर:**

कालिदास मोक्षवादी नही थे। वे तो इस जीवन के आनंददायी व्यक्तित्त्व थे। अपनी इच्छाएँ पूर्णत्त्व होने के लिए अपनी रचनाओं में उनका सौंदर्य प्रवाहित ही होता है।

कालिदास इस जगत के अधिष्ठाता ईश्वर को अष्टरूपी देवता मानते है । कालिदास का ईश्वर 'शिव' था। सृष्टि का हरेक पदार्थ कालिदास को 'शिव' रूप में लगता था। भगवान शिव या ब्रह्मा के अष्टरूप कालिदासने अपने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में पहिले ही अङ्क में घोषित किया है ।

या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिराष्टाभिरीशः।।

भगवान् शिव प्रत्यक्ष आठ रूपों में विद्यमान रहते है। जल, अग्नि, होता, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथिवी तथा वायु ये आठ रूप ईश्वर के है। इसी आठ रूपों में शिव का दर्शन होता है ,यही कालिदास का तत्त्वज्ञान है।

काव्यशास्त्रीय दृष्टया कालिदासने यही अष्ठरूपों को संजोया है। निसर्गसृष्टी को अपनी रचनाओं में सौंदर्यतया दर्शायॉ है।

शिव के पुत्र षडानन के स्नान का वर्णन कालिदास ने 'मेघदूतम्' में किया है। 'मेघ'- जल का रूप -को षडानन का स्नान करने को सूचित करता है। षडानन याने स्कन्दभगवान के जनम या उत्पत्ती के बारे में ही मेघ यक्ष को बतलाता है । तेजतत्त्व से स्कन्द की उत्पत्ती हुई थी। सूर्यदेवता से भी अधिक तेज शिवजी ने बढाकर वह अग्नि मे इकठ्ठा किया था।

इस वर्णन में कालिदास दर्शनतत्त्व के ज्ञाता थे,यह स्पष्ट होता है । तेज, जल, सूर्य इ. तत्त्वों का उल्लेख कालिदास अपनी रचनाओ में करते है। षडानन का स्नान केवल जल से नही अपि तु मेघ के बादल फुल पर बरसाने वाले होने चाहिएँ। अर्थात बरसात मे पुष्प जल के कारण भीगे होते है, वही भीगे हुए फुलों से ईश्वर की पूजा होनी चाहिएँ। यह जल का मार्ग आकाशगंगा से बहनेवाला होता है। यहा भी कालिदास 'आकाशतत्त्व' की उद्धृत करते है।

यहा कालिदास की ईश्वरप्रती श्रद्धा तथा दर्शन की बुद्धिमत्ता दिखती है। अतः पूर्वमेघ में यक्ष के द्वारा मेघ को पुष्प से षडानन का स्नान[1] करने को करते है।

तत्र स्कन्दं नियतवसतिं पुष्पमेघीकृतात्मा
पुष्पासारैः स्नपयतु भवन्व्योमगङ्.गाजलार्द्रैः।
रक्षाहेतोर्नवशशिभृता वासवीनां चमूनाम
त्यादित्यं हुतवहमुखे सम्भृतं तद्धि तेजः।।1

तेजतत्त्व से स्कन्द का जन्म हुआ है। 'शरीर' आदित्यलोके' यह तर्कसंग्रह ने तेज का शरीर सूर्यलोक में बतलाया है। इस आदित्य का तेज सायंकाल में अग्नि की शोभा बढाता है।[2]

'चन्द्रतत्त्व' को भी कालिदास महत्त्व देते है। 'शिव' के सीर पर चन्द्रमा होता है। देवगिरी नामक पर्वत पर षडानन निवासित रहते है। वही पर्वत की गुफाएँ गुंजों के कारण मोर नृत्य करते है। मयूर के पंखो के कारण चन्द्रमा से चमकती हुए किरण से पार्वती कानों को सजाती है। पुत्रप्रेम के कारण कमल का दल से सजाती है।

..... भवानी पुत्रप्रेम्णा कुवलयदलप्रापि कर्णे करोति।[3]
घोतापाङ्.ग हरशशिरुचा पावकेस्तं मयूरं
पश्चादद्रिग्रहणगुरूभिर्गर्जितैर्नर्तयेयाः ।।47 पूर्वमेघम्

शिव के संपूर्ण तत्त्व में कालिदास जलतत्त्व, आकाशतत्त्व के द्वारा तो मेघ का वर्णन करते ही है, तथापि शिव तथा पार्वती और पुत्र षडानन का वर्णन करके ईश्वरतत्त्व दिखते है। शिव तत्त्व में चन्द्रमा का दर्शन भी कालिदास भूलते नहीं है।

महादेव के शिर पर चन्द्रमा के आधार से गंगा रहती है। 'शम्भोः केशग्रहणमकरादिन्दुलग्नोर्भिहस्ताः।[4] शैलराज से उतरने वाली गङ्.गाजी का वर्णन सगर के पुत्र की कथा बतलाता है। इसी वर्णन से कालिदास तथा ईश्वर का परस्पर संबंध स्पष्ट होता है।

रघुवंश का प्रथम श्लोक शिव - पार्वती प्रति कालिदास की श्रद्धा अधिक स्पष्ट करती है।

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।1.1।। रघुवंशम्

शब्द तथा अर्थ जिसप्रकार परस्पर से निगडित है, उसी प्रकार पार्वती - परमेश्वर परस्पर से जगत से निगडित है। यही पार्वती परमेश्वर को कालिदास प्रणाम करता है। कालिदास की प्रतिभा उसके ही पंक्ती से स्पष्ट होती है। रघुराजा का वंश सूर्य के समान तेजोमय है । उसका वर्णन करना स्वयं कालिदास को माने महासागर को छोटीसी होडी (उडूपम्) से पार करता है।[5]

**कालिदास तथा अष्टतत्त्व**

कालिदास से विरचित सभी रचनाओं में अष्टतत्त्व का उल्लेख आता है। 'अभिज्ञानशाकुतलम्' में कालिदास शिव को प्रणाम करके उसके आठ रूप प्रस्तुत करते है। तर्कसंग्रह[6] में सप्त पदार्थ माने जाते है तथा 'नवद्रव्याणि'[7] याने नऊ द्रव्यों को अन्नंभट्ट

ने स्वीकृत किया है। कालिदास के आठमूर्तियाँ याने अगर वेदों की भाषा में अष्टदेवता मानी है। अन्नंभट ने पृथिवी, आप, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन ऐसे नव द्रव्य माने है। ये नव द्रव्यों में कालिदास के सोम (चन्द्र) अधिक लिया है। 'ब्राह्मण' नवद्रव्यों में नही है। बाकी आठ कालिदास के रचना में आतें ही है।

मेघदुतम् के पूर्वमेघ में पाचवा श्लोक दर्शनीय है।

धूमज्योतिःसलिलमरूतां सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थ क्व पटुकरणे: प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।।5।। मेघदूत

यक्ष का मन चेतन - अचेतन को जानना ही नही था। परन्तु कालिदास का तत्त्वज्ञान धूम, अग्नि, जल ,वायु की एकत्रिकरण से मेघ या बादल दिखते है। प्रकृति, चेतन - अचेतन आदि पद तो कालिदास का तत्त्वज्ञ स्पष्ट करते है।

मेघ को मार्ग बताते समय कालिदास दिशा का उल्लेख कर उज्जैनी [8] की ओर अर्थात उस दिशा से जाने में कहकर पुनश्च 'शिव' के प्रती अपनी श्रद्धा व्यक्त करते है। वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किए जाए तो अलकानगरी जाने तक 'मेघ' में जल की आवश्यकता होने के कारण नदी[9] पर पानी पिने की विनंती करते है।

'वक्रपन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां
सौधात्सङ्.गप्रणयविमुखो मा स्म गूरूज्जयिना
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्.गनानां
लोलापाङ्.गैर्यीव न रमसे लोचनेर्वीन्चतोऽसि।।

निर्विघ्ना नदी का रस भी उज्जैन से उतरकर पी लेना। 'निर्विन्ध्यायाः पथि भव स्माभ्यन्तरः सन्तिपत्य।'

रत्नावली के प्रथमोऽङ्.क के चौथा श्लोक में अष्टमूर्ति के चन्द्रमा तथा ब्राह्मण मूर्ति का उल्लेख आता है। पृथिवी तथा देवों का भी वर्णन प्राप्त होता है।

जितमुडुपतिना नमः सुरेभ्यो
द्विजवृषभा निरूपद्रवा भवन्तु ।
भवतु चं पृथिवी समृद्धसस्या
प्रतपतु चन्द्रवपुः नरेन्द्रचन्द्रः ।। रत्नावली 1.4

यहा देवों को नमस्कार, चन्द्रमा का जय तथा श्रेष्ठ ब्राह्मणों के उपद्रव शान्त हो, पृथ्वी 'सस्य श्यामला' होवे और चन्द्रतुल्य राजाओं का प्रताप हो।

इस स्तुती में कालिदास नक्षत्रपति स्वामी चन्द्र / चन्द्रमा का वर्णन प्राप्त होता है। 'चन्द्रमा मनसो जातः' इसका उल्लेख ऋग्वेद के पुरूषसूक्त में प्राप्त होता है। अतः स्वयं कालिदास वेद तथा दर्शन के ज्ञाता थे, यह तो स्पष्ट होता ही है तथा होता, हवि, होत्री, विधी इससे उनका ब्राह्मणों के प्रती श्रद्धा भी स्पष्ट होती है।

इस प्रकार ईश्वर तथा अष्टदेवता वर्णन कालिदास को प्रसन्न करता है, यह तो स्पष्ट होता ही है। तथापि उनका तत्त्वज्ञान कालिदास के 'दार्शनिक' कहना भी स्पष्टतया दृष्टिगोचर होता है। यही कालिदास की रचने में इतकी कवित्त्व, ईश्वर के प्रती श्रद्धा तथा तत्त्वज्ञान के प्रती अष्टतत्त्व की विलोकता दिखती है। यही महाकवि कालिदास का दर्शनतत्त्व है,यह कहना अनुचित नही है।

**संदर्भ -**

1. कालिदासरचितम् मेघदूतम् - पूर्वमेघ -श्लोक क्र.47, मोतीलाल बनारसीदास, देहली.
2. 'दिनान्ते निहितं तेजः सवित्रेव हुताशमः।' कालिदासविरचितम् रघुवंशम्, श्लोक 1 'आदित्यं वा अस्तं यत्रग्निमनुप्रविशति।'
3. मेघदूतम् - पूर्वमेघ, श्लो. 4८
4. मेघदूतम् - पूर्वमेघ, श्लो. 54
5. 'क्व सूर्यप्रभवो वंश: क्व चाल्पविषया मतिः। तितीर्षुदुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।। कालिदासविरचितम् रघुवंशम्, 1.2
6. द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्त पदार्थाः। अन्नंभट्टकृत तर्कसंग्रह
7. द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्मनांसि नवैव। अन्नंभट्टकृत तर्कसंग्रह
8. कालिदासरचितम् मेघदूतम् 29, - पूर्वमेघ,चौखम्बा प्रकाशन,वाराणसी
9. कालिदासरचितम् मेघदूतम् 30, - पूर्वमेघ ,चौखम्बा प्रकाशन,वाराणसी